



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

18-19-20

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. १८ वर्गिक पु. ५५८
नाम - लक्ष्मणपुत्रावधरि
लेखक/लिपीकार १ पृष्ठ ३६
काल १ अपूर्ण/अपूर्ण पृष्ठ १०३३:२६ गद्य

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. १९ वर्गिक श्लोका
नाम - वनदुर्गाश्लोका
लेखक/लिपीकार १ पृष्ठ १८
काल १ पूर्ण/अपूर्ण

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. २० (७) वर्गिक श्लोका
नाम - शुद्धराक्षसभाषा
लेखक/लिपीकार १ पृष्ठ ४
काल वि. १९३१ पूर्ण/अपूर्ण

वन श्रीगणेशाय नमः ॥ आत्मश्रीमहावि- दुर्गा

द्या वन दुर्गा स्तोत्र राजमहामंत्रस्य-

॥१॥ रूप ईश्वर त्रुषिः अंत्यनुष्टुप छंदः -

उत्तमार्गमि नारायण किरात त्रुषिः ई-

श्वरो वन दुर्गा परमेश्वरि देवता ॥ १॥

ॐ दुंबिजं-हीं शक्तिः ॥ किंकी लकं ॥

मम वन दुर्गा प्रसाद सिध्यथे सर्वो-

पद्रवानी नारणाथे जेपे विनियोगः ॥

अथ मालः ॥ ॐ नित्या न पंचादि-

नीं-हो अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ हंसी-

नीं-हीं तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ पद्मीनीं-

हं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ चान्दिकां-है-

अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ शंखीनीं-हो-

कनिष्ठीकाभ्यां नमः ॥ ॐ त्रिशुलधा-

वन रिणीं-हः करलककरपृष्ठाभ्यां नमः॥ दुर्गा
 एवं हृदयारि॥ ॐ भू भूवः स्वरो मि-
 ॥२॥ लिदिबन्धः॥ अथ ध्याने॥ अरी-
 शेरवकृपाणखेटबाणोसधनुः-
 शुलकृपालीकोदधानो॥ ममसा-
 महिषोत्तमांगसंस्थां वनदुर्गासि- ॥२॥
 दूशी श्रीयेमदुर्गा॥ १॥ हेमप्रस्था

वन मिंदुखंडावलेसां शंखायी जंथिः दुर्गा-
 तीहस्तां मिनेत्रां॥ हेमाब्जास्था-
 पितवरत्रां प्रसन्तां देवीदुर्गासि-
 रूपां नमामि॥ २॥ पंचोपचारैः संधु-
 ज्य॥ ततः पारायणं पुनर्न्यासादि॥
 पंचोपचारैः संधुज्य॥ दिग्विमोक्तः॥
 ॐ नमश्चण्डिकायै नमः॥ ॐ हेतु-

वन कंबुवर्णपिठेतु अग्नेयां त्रिपुरां ल- दुर्गा
कं ॥ दक्षिणे चाग्निवेलालं नैऋ-

॥३॥ त्यां यमाजिं नृकं ॥ कालारुयो वा-
रुणि पिठे वा यन्यातु करा लकं ॥
उत्तरे एकपादंतु ईशान्ये भिम- ॥३॥
रुपिणं ॥२॥ आकाशेतु निरा लकं-
बं पात्ता ले वडुवाग्नि कं ॥ यथा ग्रा-

मे यथाक्षेत्रे रक्षेन्मा वटुकस्तथा ॥३॥
लीक्ष्य दंष्ट्रमाहाकायकल्पो तो द-
हनो यमो भैरवाय नमस्तुभ्यं आ-
नुरतां दातुमर्हसि ॥४॥ सर्वमंगल
मांगल्ये सिवे सर्वार्थसाधिके ॥
शरण्ये नमस्कृत्य गौरी नारायणी-
नमोस्तुते ॥५॥ ॐ ह्रीं प्रयोगवि-

वन षष्ठे ब्रह्माण्यै नमः ॥ वासुनि स्वात्नि- दुर्गा
 नि माहेश्वर्यै नमः ॥ ॐ कालिनी-
 ॥४॥ कोंक्षि वासिनीं मां सैविणीकुमारि-
 ण्यै नमः ॥ त्रिपुरवारारि-
 ण्यै नमः ॥ अष्टकालि माहेश्वर्यै नमः ॥
 चित्रकुटुम्बराण्यै नमः ॥ त्रिपुर- ॥४॥
 रब्रह्मचारिण्यै नमः ॥ एकवृक्ष-

वन षष्ठे ब्रह्माण्यै नमः ॥ त्रि- दुर्गा
 पुरहरब्रह्मांडनायक्यै नमः ॥ ए-
 तानि दशं दशं दशं दशं दशं भैलोक्य नरा-
 करीबीजाक्षराणी ॥ ॐ ऐं- ह्रीं श्रीं
 सकलनरमुखभ्रमरी ॥ ॐ ऐं-
 ह्रीं ह्रीं- ह्रीं सकलराजमुखभ्रम-
 री ॥ ॐ क्रौं सौः सकलदेवतामु-
 खभ्रमरी ॥ ॐ- ह्रीं ह्रीं सकलका-

वन मीनि मुख भ्रमरी ॥ ॐ ह्रीं लौः सक- दुर्गा
 लदेश मुख भ्रमरी ॥ हसक्रेण सौ-
 ॥ ५॥ स्त्रौं नैलो व्यास भ्रमरी ॥ दु- क्षी-
 शुं- दु- क्षिं राज मंत्र येन मंत्र भ्रम-
 रीं ॥ सिधं तं न येन भ्रमरी ॥ ॥ ५ ॥
 साध्य मंत्र येन भ्रमरी ॥ सकल सु-
 रा सुर सर्व मुख भ्रमरीं ॥ सर्व-

क्षोभिणीं सर्व क्लेदिनीं सकल-
 मनोन्मादकारिणीं ॥ ॐ ह्रीं र-
 न्न- यो मुं डे तुरु तुरु ॥ ॐ ह्रीं को-
 व- मुकाय मम यो- छि- ला क- विणीं-
 परम कल्याणीं महा योगिनीं माहा-
 विद्यां प्रपद्ये ॥ ॐ माहा विद्यां प्रव-
 श्यामि महादेवे नानि मित्रां ॥ चि-

वन

दुर्गा

लितां किरात रूपेण मातृणां दृश्य-
नंदिनीं ॥ उत्तमे सर्व विद्यानां स-
॥६॥ र्वभूतवशं करी ॥ कुलकरी गोन-
करी धन करी धान्य करी बलक-
री यशस्वरी विद्या करी उच्चाह- ॥६॥
करी बलवद्भिनी भुक्तानां मन्त्रेभि-
णि स्त्रोभिनी मोहिनी द्राविणि सर्व-

वन

दुर्गा

मंज प्रभंजनी सर्व तंज प्रभंजानि
सर्व भयो आटन करी ऐकाहिक-
ज्वर आहिक ज्वर आहिक ज्वर वा-
तार्थिक ज्वर मासार्थ मास द्विमा-
स त्रिमास षणमास सात वत्सरिक-
यांति करं तत्त ज्वर पैलिक श्रेष्ठी-
क सान्निपातिक उष्म ज्वर शीत-

वनं ज्वर विषमज्वर सर्वदोषज्वर-^{दुर्ग}
 सर्वज्वराणां हिं दी ॥ २ ॥ आद्यंत-
 ॥ ५ ॥ शून्याः कवयः पुराणा सुक्ष्मावृ-
 हंतो ह्यनुरागिता रः ॥ सर्वज्व-
 रानुद्धंतु ममानि रुद्रपद्युमसं-
 कर्षणवा सुदेवाः ॥ आज्ञानिरु-
 द्धस्वीत विश्वधृते ॥ २ ॥ त्वं पा-

रितः सर्वभयादजस्त्रं ॥ त्रिपा-
 द्भस्मग्रहरणस्त्रिरिरारुद्धलो-
 चनः ॥ तमे प्रीतीं सुरवेदया ल-
 वमिथपातिज्वरः ॥ भस्माद्युधा-
 याविम्रहेतीक्ष्णदंष्ट्रा यथि महि-
 तन्तो ज्वरः प्रचोदयात् ॥ गंडापि-
 त्ततालुलुतेः सर्पाणां त्रासिनी-

वन शिरः शुभाक्षि शुलकूर्ण शुलदेव-^{दुर्गा}
 ॥८॥ शुलबाहु शुलद्वय शुलकुक्षि शु-
 लनाभि शुलगुद शुललिंग शुल-
 योनि शुलपाद शुलसर्व शुल-
 दिवि स्फोटक प्रभेदिनी ॐ नमो-
 भगवते परी छंद मंत्रा यते नो- ॥९॥
 भोगी द्वाष्टि शुलमुष्टी शुलपार्श्व-

वन शुलसर्व शुलानुपारा वारानंगा-^{दुर्गा}
 नंगा यहुं कटस्वाहा ॥ ॐ आसर-
 रक्षा पदरक्षा मध्यक्षरक्षा अग्निरक्षा-
 वायुरक्षा उदकरक्षा सर्वरक्षा महो-
 धकारोल्का विद्युदग्नि महानिल-यो-
 रेभ्यो मारक्षत रपंथानुगतानां चो-
 राद्रक्षतेषां कटकं बंधयामि माहा-

वन रणे सपंचशीर्षेण महादेवस्य लेन- ३०

॥९॥ सा ॥ ॐ सकल हवीं गालिदंत मधू-
रुद्राणि अहं मातांगी इहि मातांगी-
उहु मातांगी स्वर २ अमृदंड विस्व-
र २ रुद्रदंड प्रज्वल २ वायुदंड प्रह- ॥९॥
र २ इंद्रदंड भक्ष २ निरुतिदंड-
हिलि २ यमदंडानि लोपवा सिनि-

हंसि निपद्मी नीशं खिनि चक्रिणि-
गदि निशुलिनि निशुल नरधारि-
णि ॥ ॐ हो हीं हुं क्लीं २ ऊं २ हीं क्लीं-
दक्षिण कालिके क्लीं २ ऊं हीं स्वाहा ॥
अथातो मंत्रपदानि भवन्ति ॥ ॐ-
छाया वै स्वाहा चतुरायै स्वाहा ॥
इती स्वाहा ॥ सुडि स्वाहा ॥ लिहि स्वा-

वन हा ॥ ति हि स्वाहा ॥ पि ति स्वाहा ॥ दुर्गा
 पि ति स्वाहा ॥ हरं तं स्वाहा ॥ हरं-
 ॥ १० ॥ तं स्वाहा ॥ गंधर्वी पि स्वाहा ॥ गं-
 धर्वी धि प त ये स्वाहा ॥ यक्षाय स्वा-
 हा ॥ यक्षाय धि प त ये स्वाहा ॥ रक्षाय ॥ १० ॥
 ये स्वाहा ॥ रक्षाय धि प त ये स्वाहा ॥
 भूः स्वाहा भुवः स्वाहा सुवः स्वाहा ॥

वन भु भुविः स्वाहा ॥ उल्का कारि स्वाहा ॥ दुर्गा
 रुद्र रुद्री स्वाहा ॥ रुद्र नटी स्वाहा ॥
 ब्रह्मा विष्णु तै ज से स्वाहा यं इ मां-
 भूत प्रेत पिशाच शाक्रे निता वि-
 नि ब्रह्म राक्षस राज रुद्र षु क्रु-
 मां भो वा सि नि तेषां दि रां वं ध-

वन

दुर्गा

यामि ॥ हस्ते व ध्यामि ॥ चक्षुष-
ध्यामि ॥ श्रोत्रे व ध्यामि ॥ मुखे-
॥ ३३ ॥ व ध्यामि ॥ घ्राणे व ध्यामि जिह्वे-
व ध्यामि यमपुरे पंचाशद्योज-
न विस्तीर्णैस्तद्देव ध्यातु ॥ सर्व- ॥ ३३
दुष्टसर्वसर्वगं व ध्यातु ॥ गति-
व ध्यामि मार्ति व ध्यामि ॥ बुद्धी-

व ध्यामि ॥ आकाशं व ध्यामि ॥
अंतरिक्षं व ध्यामि ॥ पातालं व ध्या-
मि ॥ सर्वांगं व ध्यामि ॥ ॐ ह्रीं व-
गलामुखि सर्वदुष्टाना वाचं पु-
र्यं पादं स्तभयानि न्हो किल य बु-
द्धिं विनाशाय ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ ॐ-
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लो गं गणपतये वरद-

वरद सर्वजनमेवस्यमानयस्या-^{दुर्गा}
 हा ॥ योरुद्रो अग्नौ यो अप्सु य-
 ओरुद्रो विष्वा भु-
 वना विवेश तस्मै रुद्राय नमो-
 अस्तु ॥ पंचयोजने वीरिणि हे-
 यपुरवे रुद्रो बध्नातु ॥ मंडलं रु-^{॥३१॥}
 द्रः सपरीवाराधिदेवता प्रत्यधि-

वन देवता मंडलं प्रत्यक्ष रुद्र मंडलं-^{दुर्गा}
 बंध २ मोरक्ष रुद्र अन्यता-
 ल रुद्रा रुद्रा महावज्र कवचा-
 यास्त्रा पराजन्मोरा विष सर्प सिं-
 ह न्या द्रामि दुष्ट ग्रहान् मम सर्वे-
 पद्रव नन्नाशय नाशय ॐ हौ-

वन

दुर्गा

हीं हुं ह्रीं श्रीं बुं क्रौं आं ह्रीं क्रौं - ह्रीं -
हुं फट स्वाहा ॥ ॐ - ह्रीं ह्रीं अंब -
॥ १३५ ॥ कंज जा महे सुगंधि पुष्टि वर्धने ॥
उर्वारुक् । मेव बंधना मृषो - ॥ १३६ ॥
पुष्टि यभा मृतात् ॥ ॐ नमो भू -
गवते रुद्राय नमः ॐ नमो रुद्र -

य ॥ प्राच्यां दिशि इंद्रो देवता ए -
रावता रुद्रो हेमवर्णे विज्ज रुद्र -
इंद्रो देवता तु मंडलं इंद्र तपरी वा -
रोधि देवता प्रपाधि देवता मंड -
लं प्रपक्ष इंद्र मंडलं बंध २ मोरक्ष २
अचल २ अक्षय २ साहा वज्र कुव -

वन

दुर्गा

॥१४

चायास्त्राय राज-चोर विषसर्व-

रिंहं न्याघ्राग्निदुष्टग्रहान् मम-

सर्वोपद्रवन्ता शय २ ॐ-हो-हीं-

हुं ह्रीं श्रीं हुं क्रौं आं-हीं क्रौं-हीं हुं-

फट्स्वाहा ॥ इन्द्रो विश्वतर-य-

रिह्वामहे जनेभ्यः ॥ अस्माक-

वन

दुर्गा

मस्तुमेव तः ॥ इन्द्राय नमः इन्द्रः-

सुप्रियो वरदो भवतु ॥ ॐ नमो-

इन्द्राय नमः ॥ ॐ नमो-य ॥ अग्ने-

यां दिशी अग्निदेवता मेषारुढोऽग्नि-

वर्णो न्वाता हरत्तोऽग्निवध्ना तु मे-

उत्तं अग्निः सपरिवारो धिदेव-

ता प्रत्यधिदेवता मेऽत्तं प्रत्य-

नन

दुर्ग

क्षान्तिमेतत्तुल्यं धरं मोरक्ष अ-

चक्रं आक्रम्य माहावज्जकव-

॥३५॥

न्यायास्त्राय राजन चौरविषर-

क्षसिंहं व्याघ्रानि दुष्टग्रहान्-

मम सर्वोपद्रवान्नाशय ३५ - ॥३५॥

ह्रीं ह्रीं हुं ह्रीं श्रीं हुं क्रीं आं ह्रीं-

क्रीं ह्रीं हुं फट् स्वाहा ॥ अग्नि-

दुत्तं वृणि मेह होतारं विश्ववे-

दत्तं ॥ अरय यशस्य सुकृत्तुं ॥

अग्नये नमः अग्निः सुप्रीतो-

वरदो भवतु ॥ ॐ नमो अ०-

नमः ॐ नमो ये ॥ याम्यादि-

शियमो देवता महिषारुदो कृष्ण-

वर्णो दंतु हस्तो यमो बध्नातु ॥

वन

दुर्गा

मंडुलं यमः सपरिवारो धिदेवता-
प्रत्यधिदेवता मंडुलं प्रत्यक्ष-
॥१६५॥ यममंडुलं बंधय २ मोरक्ष २ अ-
चल २ आक्रम्य २ महावज्रक-
वचा पाश्चात्तराज-चोर विष-
सर्प सिंहा न्याघ्राग्नि दुष्ट महान्-
मम सर्वोपद्रवान्नाशय २ ॐ-

वन

दुर्गा

होहिंहुं क्लीं श्रीं बुं क्रौं ओं ह्रीं क्रौं-
ह्रीं हुं कट् स्वाहा ॥ यमाय नमः ॥
सुसुतयमाय नमः हुताहवीः ॥
यमं हथ हो गच्छत्यग्निदुतो अ-
रंकुता ॥ यमाय नमः यमः सु-
प्रसन्नो वरदो भवन्तु ॥ ॐ नमो-
यं नमः ॐ नमो नमः ॥ नैऋत्या-

वन

॥१७॥

दिशि निरुतिरेव ता नरा रुखे-
नीलवर्णः स्वङ्गहस्तो निरुति-
वध्यात् ॥ मंडलं निरुतिः स-
पारिवारो धिदेवता प्रत्यधि
देवता मंडलं प्रत्यक्ष निरुति-
मंडलं वं ध २ मोरक्ष उच्यते २
आक्रम्य २ महावज्र दध्या-

यास्त्राय राज्ञो रविषसर्पसि-
नृन्या प्राप्ति दुष्टग्रहान् समस्त-
वेषिद्रव्यान्नाशय २ ॐ ह्रीं ह्रीं-
ह्रीं श्रीं बुं क्रौं आं ह्रीं क्रौं ह्रीं हूं-
क्रुं स्वाहा ॥ मोरगुणः परावरो-
निरुतिरिदं ह्यना वाच्यते ॥ प-
दिष्टं तुष्ण्या सह ॥ निरुतिमेतमः-

वन

दुर्गे

निःशुनिः सुप्रसन्नो वरदो भव-

तु ॥ ॐ नमो नैः नमः ॐ न-

॥ ३५ ॥

मो नैः-ये-॥ वारुण्यो दिशि वरु-

णो देवता मकरा रुढः श्वेत-

वर्णः पाशहर चो वरुणो बध्ना- ॥ ३६ ॥

तु मंडलं वरुणः सपरीवारो-

धि देवता प्रत्यक्षी देवता मंड-

[OrderDescription]
,CREATED=01.08.19 15:55
,TRANSFERRED=2019/08/01 at 16:01:16
,PAGES=19
,TYPE=STD
,NAME=S0001221
,Book Name=M-19-VAN DURGASTOTRA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF
,FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF

FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,